



श्रीमत् वेदान्त रामानुज मुनि करुणालब्ध वेदान्त युग्मम्  
श्रीमत् श्रीवास योगीश्वर गुरुपदयोर्पित स्वात्मभारम्  
श्रीमत् श्रीरङ्गनाताहय मुनिकृपया प्राप्त मोक्षाश्रमं तं  
श्रीमत् वेदान्त रामनुज मुनिमपरम् संश्रये देशिकेन्द्रम्



श्रीमत् श्रीवास योगीश्वर मुनि करुणालब्ध वेदान्त युग्मम्  
श्रीमत् वेदान्त रामानुज गुरुपदयोर्पित स्वात्मभारम्  
श्रीमत् श्रुत्यन्त रामानुज यति नृपतेः प्राप्त मोक्षाश्रमं तं  
श्रीमत् श्रीवास रामनुजमुनि संश्रये ज्ञानवार्धिम्



वेदान्त लक्ष्मण मुनीन्द्र कृपात्त बोधम्  
तत्पाद युग्म सरसीरुह भृङ्गराजम्  
त्रय्यन्त युग्म कृतभूरि परिश्रमं तं  
श्रीरङ्ग लक्ष्मणमुनिम् शरणं प्रपद्ये

# श्री गोदा अष्टोत्तर शतनामावलिः

*shri godA aShTottara shatanAmAvaLiH*

# श्री गोदा अष्टोत्तर शतनामावलि:

ओं श्रीरङ्गनायक्यै नमः	ओं फल्गुण्य आविर्भवायै नमः
ओं गोदायै नमः	ओं रम्यायै नमः
ओं विष्णुचित्तात्मज्यै नमः	ओं धनुर्मास कृत व्रतायै नमः
ओं सत्यै नमः	ओं चम्पकाशोक पुन्नाग मालती विलसत् कचायै नमः
ओं गोपी वेष धरायै नमः	ओं आकारत्रय संपन्नायै नमः
ओं देव्यै नमः	ओं श्रीमत् अष्टाक्षरी मन्त्र राजस्थित मनो रथायै नमः
ओं भू सुतायै नमः	ओं मोक्ष प्रदान निपुणायै नमः
ओं भोग शालिन्यै नमः	ओं मन्त्र रत्नाधि देवतायै नमः
ओं तुलसी काननोत् भूतायै नमः	ओं ब्रम्हण्यायै नमः
ओं श्रियै नमः	ओं लोक जनन्यै नमः
ओं धन्विपुर वासिन्यै नमः	ओं लीलामानुष रूपिण्यै नमः
ओं भट्टनाथ प्रियकर्यै नमः	ओं ब्रम्हज्ञायै नमः
ओं श्री कृष्ण हित भोगिन्यै नमः	ओं अनुग्रहायै नमः
ओं आमुक्त माल्यदायै नमः	ओं मायायै नमः
ओं बालायै नमः	ओं सच्चिदानन्द विग्रहायै नमः
ओं रङ्गनाथ प्रियायै नमः	ओं महापति व्रतायै नमः
ओं परायै नमः	ओं विष्णु गुण कीर्तन लोलुपायै नमः
ओं विश्वंभरायै नमः	ओं प्रपन्नार्ति हरायै नमः
ओं कलालापायै नमः	ओं नित्यायै नमः
ओं यतिराज सहोदर्यै नमः	ओं वेदसौध विहारिण्यै नमः
ओं कृष्ण अनुरक्तायै नमः	ओं श्री रङ्गनाथ माणिक्य मण्जयै नमः
ओं सुभगायै नमः	ओं मञ्जुभाषिण्यै नमः
ओं सुलभ श्रियै नमः	ओं सुगन्धार्थ ग्रन्थ कर्यै नमः
ओं सलक्षणायै नमः	ओं रङ्गमङ्गल दीपिकायै नमः
ओं लक्ष्मी प्रिय सरख्यै नमः	ओं ध्वज वज्राङ्कुश अब्-जाङ्क मृदुपाद तलाञ्छितायै नमः
ओं श्यामायै नमः	ओं तारका कार नखरायै नमः
ओं दयाञ्चित दृगञ्चलायै नमः	ओं प्रवाळ मृदुळ अङ्गुल्यै नमः

# श्री गोदा अष्टोत्तर शतनामावलि:

ओं कूर्मोपमेय पदोर्ध्व भागायै नमः	ओं मुक्ता सुचिस्मितायै नमः
ओं शोभन पार्श्विकायै नमः	ओं चारु चाम्पेयनिभ नासिकायै नमः
ओं वेदार्थ भाव विदित तत्व बोधाङ्घ्रि पङ्कजायै नमः	ओं दर्पणाकार विपुल कपोल द्वितयाञ्चितायै नमः
ओं आनन्द बुद् बुदाकार सुगुल्फायै नमः	ओं अनन्तार्क प्रकाशोद्यन् मणि ताटङ्क शोभितायै नमः
ओं परमायै नमः	ओं कोटि सूर्याग्नि सङ्काश नानाभूषण भूषितायै नमः
ओं अणुकायै नमः	ओं सुगन्ध वदनायै नमः
ओं तेजशश्रिय उज्वल धृत पादाङ्गुलि सुभूषितायै नमः	ओं सुभ्रुवे नमः
ओं मीन केतन तूणीर चारुजङ्घा विराजितायै नमः	ओं अर्धचन्द्र ललाटिकायै नमः
ओं ककुद्भज जानुयुग्म आढ्यायै नमः	ओं पूर्ण चन्द्राननायै नमः
ओं स्वर्ण रंभा भसक्थिकायै नमः	ओं नील कुटिलालक शोभितायै नमः
ओं विशाल जघनायै नमः	ओं सोन्दर्य सीमायै नमः
ओं पीनसु श्रोण्यै नमः	ओं विलसत् कस्तूरी तिलकोज्ज्वलायै नमः
ओं मणिमेखलायै नमः	ओं धगद् धगाय मानोद्यन्मणि सीमन्त भूषणायै नमः
ओं आनन्द सागरावर्त गम्भीरांभोज नाभिकायै नमः	ओं जाज्वल्यमान सद्-रत्न दिव्यचूडा वतंसकायै नमः
ओं भास्व द्वलि त्रिकायै नमः	ओं सूर्य अर्धचन्द्र विलसत् भूषणाञ्चित वेणिकायै नमः
ओं चारु जगत्पूर्ण महोदर्यै नमः	ओं निगन्निद्र गत्-नपुञ्ज प्रान्त स्वर्ण निचोलिकायै नमः
ओं नववल्ली रोमराज्यै नमः	ओं सद्रत्न अञ्चित विद्योत विद्युत्कुञ्जाभ शाटिकायै नमः
ओं सुधा कुंभायित स्तन्यै नमः	ओं अत्यर् कानल तेजोधिमणि कञ्चुक धारिण्यै नमः
ओं कल्प माला निभ भुजायै नमः	ओं नाना मणिगणाकीर्ण हेमाङ्गद सुभूषितायै नमः
ओं चन्द्रखण्ड नखाञ्चितायै नमः	ओं कुंकुमागरु कस्तूरी दिव्य चन्दन चर्चितायै नमः
ओं सुप्रवाशाङ्गुली न्यस्त महारत्न अङ्गुलीयकायै नमः	ओं स्वोचित उज्वल्य विविध विचित्र मणि हारिण्यै नमः
ओं नवारुण प्रवाळाभ पाणि देश समञ्चितायै नमः	ओं असङ्ख्य सुखस्पर्श सर्वातिशय भूषणायै नमः
ओं कम्बुकंठयै नमः	ओं मल्लिका पारिजतादि दिव्य पुष्प स्रगञ्चितायै नमः
ओं सुचुबुकायै नमः	ओं श्रीरङ्ग निलयायै नमः
ओं बिंबोष्ठयै नमः	ओं पूज्यायै नमः
ओं कुन्द दन्त युजे नमः	ओं दिव्यदेश सुशोभितायै नमः
ओं कारुण्य रस निष्यन्द नेत्रद्वय सुशोभितायै नमः	ओं श्रीरङ्ग नायक्यै नमः